>

Title: Need to revamp the mid-day meal scheme and to relieve the teaching staff from the management of the scheme.

श्री विजय बहादुर सिंह (हमीरपुर, उ.प्र.): मिड-डे-मिल (माध्याह्न भोजन) में कक्षा 1 से कक्षा-8 तक बच्चों को दोपहर में खाना खिलाया जाता है। इसकी पूरी जिम्मेदारी उस स्कूल के अध्यापक को दी जाती है। खाने की गुणवत्ता, खाने का सामान, हिसाब-किताब और उसके बनवाने की संपूर्ण जिम्मेदारी अध्यापक पर है। वैसे तो एक स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (एस-एम-सी) का भी एक्ट में प्रावधान है जिसमें 15 मेंबर होते हैं। उसमें बच्चों के अभिभावक की तरफ से प्रतिनिधि आदि सम्मिलित होते हैं, और इस व्यवस्था में गांव का प्रधान पूरी तरह से बाहर रखा जाता है।

इसका हिसाब-किताब और बैंक ऑपरेशन भी हेडमास्टर करता है, और संक्षेप में शुरू से अंत तक मध्याह्न भोजन की पूरी जिम्मेदारी अध्यापक पर रहती है, और उसके बाद ग्रामवासी अभिभावकगण बच्चे और शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारी जैसे बेसिक अधिकारी आदि सीधे अध्यापक पर पूरी जिम्मेदारी को निभाने का उत्तरदायित्व रखते हैं।

इस पूरी कार्यवाही में ग्राम प्रधान को पृथक रखा गया है, जबकि भारत के संविधान में पार्ट-9 की

धारा-243बी में ग्रामसभा

धारा-243ए में लिखा है कि ग्रामसभा में एक्सरसाइज सच पावर एड विलेज लेबल एज लिजेस्लेचर आफ स्टेट एवं

धारा-243 सी कान्सीटयूशन ऑफ पंचायत में सीधे चुनाव द्वारा प्रधान चुनने की प्रक्रिया दी है जिसको संविधान में पंचायत का चेयर परसन भी कहा जाता है।

243ए में पंचायत में चेयर परसन के चुनाव का प्रावधान है, पर स्कूल जो कक्षा-1 से कक्षा-5 तक प्राइमरी स्कूल या प्राथमिक पाठशाला और कक्षा-5 से कक्षा-8 तक जूनियर हाईस्कूल तक ये प्रायः स्कूल प्रति ग्रामसभा में होते हैं परंतु जो गांव में स्कूल हैं उस स्कूल से प्रधान को कोंसों दूर रखा गया है ये पंचायतीराज और केंद्र सरकार की नीति की दुर्दशा है।

इस पूरी प्रक्रिया में हेडमास्टर या किसी स्कूल में एक ही अध्यापक होता है उसको जिम्मेदारी देने से वह पढ़ाई छोड़ करके खाने से संबंधित सब काम दिनभर करता है। और सरकार उसे वेतन पढ़ाने के लिए देती है और इस स्कूलों से बच्चों की पढ़ाई न होकर बच्चों को खाना बनाने की कला व रसोइया बनाया जा रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि स्कूल में शिक्षा लुप्त हो रही है। छोटे-छोटे बच्चे देश के भावी कर्णधार हैं यदि इनकी नींव कमजोर हो गयी तो आगे क्या होगा इसकी कल्पना करना मुश्किल है।

मेरा सुझाव व मांग है कि .....

1. शिक्षकों को मिड-डे-मील (मध्याह्न भोजन) से दूर रखा जाए।

2. स्कूल मैनेजमेंट कमेटी को प्रभावी बनाया जाए।

3. मिड-डे-मिल की जिम्मेदारी ग्राम प्रधान की अध्यक्षता में मिड-डे-मील की कमेटी को सौंपा जाए।